आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : दूसरा | जून–2014

4 **अमृत वेला**
परम सन्त अजायब सिंहजी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

9 **पानी में मधानी**
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज (आस्ट्रेलिया)

21 **सवाल-जवाब**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी. एस. आश्रम राजस्थान)

29 **एकाग्रता**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले संदेश
(16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

34 **धन्य अजायब**
अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04
096 67 23 33 04

सहयोगी
रेनू सचदेवा
सुमन आनन्द
राजेश कुक्कड़
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जून 2014 –147– **मूल्य – पाँच रुपये**

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

अमृतवेला

अभ्यास में बैठने से पहले जरूरी है कि हम अपने मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। आप यह मत समझें कि हमने जो भी मिनट-सैकिंड मालिक की याद में बिताया है वह लेखे में नहीं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैः

हर धन के भर लेहो भंडार, नानक गुरु पूरे नमस्कार।

हम जो भी थोड़ा बहुत भजन-अभ्यास कर रहे हैं यह एक किस्म का भंडार भर रहे हैं। बेशक जीव को पता नहीं कि मेरा कुछ बन रहा है लेकिन हम जितना भी भजन अभ्यास करते हैं सतगुरु उसे लेखे में रखता है अगर वह हमें इसका तजुर्बा जल्दी से जल्दी दे दे तो यह इस तरह है जैसे बच्चा नासमझ है उसे पता नहीं कि पौंड की क्या कीमत है? पिता अपनी कमाई हुई पूंजी भी समझदार बच्चे के हवाले कर देता है।

हम रूहानियत का इस्तेमाल दुनिया की मान-बड़ाई या बीमारियों के समय कर लेते हैं लेकिन गुरु चुपचाप हमारी कमाई को संभालकर लेखे में जमा करता है। गुरु जानता है कि बच्चा उस पूंजी को खराब नहीं करेगा। जो शिष्य फौलाद का दिल बनाकर भजन-सिमरन करता है गुरु की याद बनाकर रखता है वहाँ गुरु ही रह जाता है; बाकी दुनिया के ख्याल दूर हो जाते हैं।

वही सूफी है जहाँ नाम ही नाम हो, दुनिया का कोई ख्याल न हो। ऐसी सूफी महान आत्मा जब अभ्यास में बैठती है तो देवता भी उसे चारों तरफ से घेर लेते हैं कि ऐसा जीव मातलोक में

अभ्यास पर बैठा है; देवता भी उसकी जय-जयकार करते हैं। सतगुरु ऐसे साफ दिलवाले सूफी शिष्य के अंदर अपनी सब बरकतें लेकर बैठ जाता है; उसे हक से भी ज्यादा दे देता है।

परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है इसे बाजार से खरीदा नहीं जा सकता, जोर से प्राप्त नहीं किया जा सकता। भक्ति किसी खास परिवार की भी नहीं होती।

भक्ति भक्तन हूं बन आई।

भक्ति भक्तों की जायदाद है। पुत्र, पुत्री या सेवक कोई भी भक्ति करें वह सतगुरु की दात प्राप्त कर लेता है। भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है। ये पाँचो डाकू पढ़-पढ़ाई से, समाज बदलने से बस में नहीं आते। ये सिर्फ नाम की कमाई से ही बस में आते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मन मूसा पिंगल पया पी पारा हर नाम।

समझदार लोग जानते हैं अगर चूहे को पारा पिला दें तो वह मरता नहीं जीवित रहता है लेकिन हरकत नहीं कर सकता। यही हालत हमारे मन की हैं, सच्चा सुख, सच्ची शान्ति और बड़ाई अपने घर वापिस सच्चखंड पहुँचकर ही है। देवी-देवता और राजा-महाराजा भी इसी सुख की तलाश में हैं लेकिन यह सच्चा सुख दुनिया की हुकूमत और धन-दौलत में नहीं।

गुरु ही सच्चा प्यार करता है बाकी दुनिया के प्यारों में गरज और अशान्ति है। परमात्मा की यह रीति है कि वह जिसे एक बार इज्जत बख्श देता है अपने घर में जगह दे देता है फिर उससे छीनता नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ऐह रीत चली भगवंत।

हम दुनिया की मान-बड़ाई के बारे में जानते ही हैं कि जो आदमी मान-बड़ाई देते हैं जय-जयकार करते हैं फूल बरसाते हैं अखबारों में निकलवाते हैं लेकिन जब दूसरी पार्टी का जोर पड़ जाता है हुकूमत हाथ से निकल जाती है तो वही लोग अखबारों में बदनामी करते हैं, गले में जूतों के हार तक डाल देते हैं।

हमारा परिपूर्ण परमात्मा हमें बड़ाई देकर पछताता नहीं, उदास नहीं होता। भक्ति सच्चे सुख, सच्ची इज्जत की दाता है लेकिन जब तक हम सन्त सतगुरु की शरण में नहीं जाते हम इस धन को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। जिन महापुरुषों ने ये चीज़े देखी हुई हैं वे बयान करते हैं:

साधसंग अगन सागर तरिए।

सतगुरु सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे, ''आग के समुद्र का नाम सुनकर दुनिया काँपती है। अंदर अग्नि के बड़े-बड़े खम्बे हैं अगर एक खम्बा भी इस दुनिया में आ जाए तो उस सेक से दुनिया जल जाए। जिन्होंने यहाँ गलतियां की होती है उन मलीन आत्माओं को उन आग के खम्बों के साथ चिपटाया जाता है।''

हम इस नाम के धन को सन्त-सतगुरु की मदद के बिना प्राप्त नहीं कर सकते। परमात्मा के भक्त परमात्मा से बढ़कर हैं क्योंकि भक्तों ने परमात्मा को प्यार की जंजीरों से अपने बस में किया हुआ है। सन्त परमात्मा के प्यारे बच्चे होते हैं। प्यारा बच्चा जो चाहे अपने पिता से करवा सकता है। कबीर साहब कहते हैं:

मेरी बंधी भक्त छुड़ावे।

मेरी बंधी को भक्त छुड़ा सकता है। परमात्मा कहता है कि अगर भक्त मुझे बांध भी दे तो मैं यह नहीं पूछ सकता कि मुझे

किस अपराध में बाँधा है? परमात्मा ने मातलोक में भक्त को बड़ाई दी है। आप कहते हैं:

साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोलया बिरथा न जाए।
जो बोले पूरा सतगुरु सो परमेश्वर सुणया।
सोई वरतया जगत में घट-घट में रमया।।

अहमक का बोलना किसी लेखे में नहीं है। सन्त-सतगुरु बोलते हैं तो परमात्मा सुनता है। सन्त कोई करामात नहीं दिखाते, कोई खेल नहीं करते। सन्तों की बड़ी करामात यही है कि आप सन्त के किसी सेवक को चोला छोड़ते हुए देखें।

सज्जन सेही आखिए जो चलदयां नाल चलन।
जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दसन।।

सज्जन वही है जो दुख के समय में काम आए, दुख का समय वह है जब हम इस संसार समुंद्र से जाते हैं; उस समय बहन-भाई कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता। मौत का क्या पता है किस समय आ जाए? यह तो मालिक को ही पता है जिसने मौत का समय तय किया है। गुरु खतरनाक से खतरनाक समय में भी आकर संभाल करता है, यह उसका बिरद है।

भक्ति अमोलक धन है चोर इसे चुरा नहीं सकता, आग इसे जला नहीं सकती, पानी इसे डुबो नहीं सकता। हम जो भक्ति करते हैं वह हमारे खजाने में जमा हो जाती है। एक घंटे के लिए मन को दुनिया के काम से खाली करके अभ्यास में बैठें। लगातार मालिक ही याद आए, बिना रूके सिमरन करें। सिमरन आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है, हमेशा सिमरन का झाड़ू लगाएं।

***

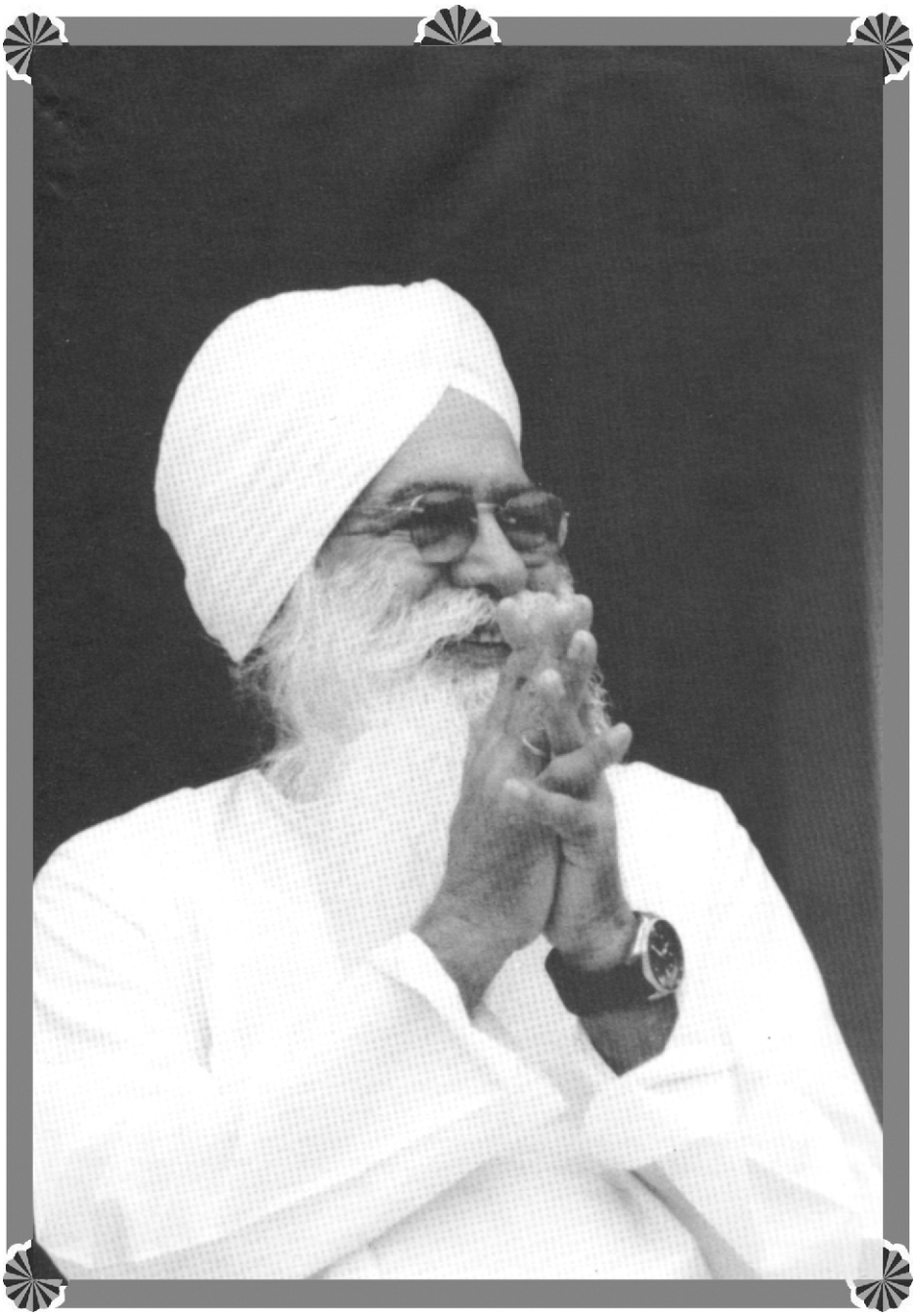

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

पानी में मधानी

कबीर साहब की बानी

ऑस्ट्रेलिया

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपनी दया करके हमें यश करने का मौका दिया है। यह उनकी दया-मेहर है कि हम हर रोज उनकी याद में बैठते हैं।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे संसार में परमात्मा के हुक्म में आते हैं बेशक उन्हें कितनी भी तकलीफें क्यों न उठानी पड़े लेकिन उन्होंने संसार में आकर सच जरूर बताया। कबीर साहब सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग में भी आए। आप पहले सन्त हैं जो कभी इंसानी जामें से नीचे नहीं गए। आपकी पवित्र पुस्तक अनुराग सागर में सारा हाल लिखा हुआ है।

इतिहास बताता है कि सन्तों को दुख देने के लिए जिन लोगों का आपस में रीति-रिवाज नहीं मिलता उस समय मुल्ला, पादरी, भाई और पुजारी एक ही श्रेणी में आ जाते हैं ताकि सन्तों का उपदेश दुनिया में न पहुँच सके। ये एक-दूसरे के रीति-रिवाज का खंडन करते हैं कि हमारा भक्ति करने का तरीका सही है। रीति-रिवाज के पीछे ही एक समाज दूसरे समाज के साथ लड़ता-झगड़ता है। कबीर साहब का पालन-पोषण एक मुसलमान घराने में हुआ। आपका विरोध मुसलमान और हिन्दु दोनों ही फिरके करते थे। कबीर साहब कहते हैं:

हिन्दु कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़े मरत है, मरम न काहूं जाना।।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे सदा यही बताते हैं कि परमात्मा एक है उससे मिलने का साधन और तरीका भी एक है। सब महात्मा

यही उपदेश देते हैं कि परमात्मा सबके शरीर के अंदर है। जिसको मिला है अंदर से ही मिला है और जिसको मिलेगा अंदर से ही मिलेगा। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पंडित भेख पेट के मारे, वे संतन पर करते तान।
हितकर सन्त उन्हें समझावें वे माने नहीं माने आन।
उनको चाह मान और धन की परमार्थ से खाली जान।।

सन्त-महात्मा कहते हैं प्यारेयो! हम सब उस परमात्मा के बच्चे हैं। यह जो चलती-फिरती दुनिया आपको नजर आ रही है यह वनस्पति की तरह नहीं उगी। इसे बनाने वाला कोई जरूर है, इसके पीछे कोई न कोई ताकत काम कर रही है।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है उसी काम को दूसरा आदमी भी कर सकता है।'' सन्त यह नहीं कहते कि हमने परमात्मा को देखा है, आप नहीं देख सकते। हर चीज का एक ही साधन और तरीका है अगर हमें डाक्टर बनना है तो हमें किसी डाक्टर की सोहबत करनी पड़ती है अगर इजींनियर बनना है तो किसी इजींनियर की सोहबत करनी पड़ती है; कुछ शर्तें शिष्य को पूरी करनी पड़ती है। शिष्य को परमात्मा से मिलने की पूरी रियायत होती है। जो शिष्य अंदर जाते हैं वे देखते हैं कि गुरु अंदर हर मुश्किल का हल ढूंढता है, शिष्य की मदद करता है।

इतिहास पढ़ने से पता लगता है बेशक सन्त-महात्मा बने बनाए संसार में आते हैं फिर भी हम भूले लोगों को डेमोस्ट्रेशन देने के लिए सन्त बहुत सख्त मेहनत करते हैं। उन्होंने अपनी जिंदगी के कई कीमती साल भजन-अभ्यास में और परमात्मा की खोज में लगाए होते हैं। अगर हमने दुनिया के किसी काम में

कामयाबी हासिल करनी हो तो मेहनत करनी पड़ती है। मोती निकालने के लिए गहरे समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती है। सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है। महात्मा प्यार से कहते हैः

कल करन्ता अब कर अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवई जब सिर पर आया काल।।

हम भूले जीव आज का काम कल पर छोड़ देते हैं कि अभ्यास कल कर लेंगे आज सो लेते हैं, कल डायरी में लिख लेगें; भूल बख्शवा लेंगे। सन्त प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा न घर-बार छोड़ने से मिलता है न जंगलो-पहाड़ो में जाने से मिलता है; न पुत्र-पुत्रियां छोड़ने से मिलता है और न जिस्म पर खास किस्म के कपड़े पहनने या मुल्क बदलने से मिलता है, परमात्मा हमारे अंदर है।''

जिस तरह विद्या की ताकत हर बच्चे के दिमाग के अंदर है लेकिन जो बच्चे टीचरों का कहना मानते हैं मेहनत करते हैं वे अच्छे जज, वकील, डॉक्टर बनकर अच्छी जिंदगी गुजारते हैं। जो बच्चे स्कूल नहीं जाते टीचरों का कहना नहीं मानते वे क्या उम्मीद कर सकते हैं? सन्त-महात्माओं ने आपके अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर नहीं डालना, वह परमात्मा तो आपके अंदर है; आपकी इंतजार में ही बैठा है। कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों तिल माहीं तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमे जाग सके तो जाग।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैंः

काष्ट में ज्यों है बेसंतर मत संयम काढ कढीजे।

लकड़ी के अंदर अग्नि है लेकिन हमें दिखाई नहीं देती। जब युक्ति से लकड़ी के ऊपर लकड़ी रगड़ते हैं तो लकड़ी के अंदर से ही

अग्नि का शोला पैदा होता है। तिल के अंदर तेल होता है लेकिन जब हम युक्ति से तिल को बेलन में चलाते हैं तो तिल में से तेल निकाल लेते हैं। सन्त कहते हैं कि पत्थर पूजने से परमात्मा नहीं मिलता। कबीर साहब कहते हैंः

आप घड़े उसे आप ही पूजे, पत्थर ने राम बनाके।

अगर पत्थर पूजने से परमात्मा मिलता हो तो हम पहाड़ पूजने के लिए तैयार हैं। कबीर साहब तो यहाँ तक कहते हैंः

पाहन परमेश्वर किया पूजे सब संसार।
इस भरवासे जो रहे सो डूबे काली धार।।

महात्मा रविदास जी कहते हैंः

ठाकुर पूजे मुल्ल ले मन हठ तीर्थ जाए।
देखा देखी स्वांग धर भूले भटका खाए।।

सन्त आकर परमात्मा का संदेश देते हैं सच बोलते हैं तो दुनिया को कड़वा लगता है। मिश्री मीठी होती है। बुखार वाले के मुँह का जायका खराब होता है, वह कहता है कि मिश्री कड़वी है दूर ले जाओ। बाहर के रीति-रिवाज करके, पत्थर पूजकर हमारे दिल पत्थर जैसे हो गए हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि एक महात्मा आकर हमारे अंदर से दस-बीस भ्रम निकालता है लेकिन हम अजीब किस्म के जीव हैं कि हम बीस-पच्चीस भ्रम और डालकर बैठ जाते हैं। आपके आगे कबीर साहब का शब्द रखा जा रहा हैः

डर लागे और हांसी आवे अजब जमाना आया रे।
धन दौलत ले माल खजाना वेश्या नाच नचाया रे।

कबीर साहब कहते हैं, ''मुझे डर भी लगता है और इस दुनियादारी की पूजा को देखकर हँसी भी आती है कि ऐसा अजब

जमाना आ गया है कि हम सारी जिंदगी **पानी में मधानी** डालकर बैठ जाते हैं। चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें पानी में से मक्खन नहीं निकलेगा। मक्खन जब भी निकलेगा दूध में मधानी चलाने से ही निकलेगा।

हमारा जीवन हमारे परिवार से ही शुरू होता है। मेरे पिताजी जपजी साहब पढ़ते थे, उन्हें गुरु-ग्रंथ पर भरोसा था। मैं सिक्ख परिवार में पैदा हुआ। मेरा जीवन भी यहीं से शुरू हुआ। आम सिक्ख तो पाँच बानियां पढ़ते हैं लेकिन मुझे सात-आठ बानियां जपजी साहब, जाप साहब, चौपई, रहरास, आसा जी की वार और सुखमनी साहब जुबानी याद थी। मेरा आठ-नौं घंटे पढ़ाई का कार्यक्रम चलता था।

जब बाबा बिशनदास जी ने मुझसे पूछा, ''क्यों भई! मन टिका, कभी अंदर चिंगारी देखी?'' उस महात्मा की बात तो ठीक थी लेकिन दिल को बहुत कड़वा लगता था। अगर हमारे अच्छे भाग्य हों तो हम महात्मा के कड़वे वचन के बारे में सोचना शुरू करते हैं। जब हम जपजी साहब शुरू करते और सुखमनी साहब की आखिरी पंक्ति पढ़ते तो उस समय पता लगता बाकी सात-आठ घंटों का पता ही नहीं लगता था कि मन कहाँ फिरता है, उस समय मन कितने लोगों से बातें करता है?

प्यारेयो! मैं परकार की तरह बाबा बिशनदास जी के चारों तरफ घूमा। मैं जब किसी किस्म की साधना करके आपके पास जाता तो आप उसे सही करने के लिए पूछते, ''कुछ हासिल हुआ?'' उस समय दिल को चोट लगती कि मैंने तो इतनी साधना की है, मैं इन्हें पसंद ही नहीं आता! जिस महात्मा ने मुझसे धूनिया तपवाई, वह महात्मा कहता था कि धूनियां तपाने से तुझे शान्ति आएगी।

धूनियां तपाना बहुत कठिन साधना है। जून के महीने में बहुत सख्त गर्मी होती है। यह साधना जून के महीने में दिन के बारह बजे शुरू की जाती है। चारों तरफ धूनिया जलाई जाती हैं और सिर के ऊपर सूरज की गर्मी होती है। शरीर बिल्कुल नंगा रखा जाता है सिर्फ आंखों को बचाने के लिए आँखों पर पट्टी बांधी जाती है। जब मैं धूनियां तपाकर बाबा बिशनदास जी के पास गया तो आपने कहा, ''प्यारेया! पांच किस्म की आग तो पहले ही तेरे शरीर के अंदर जल रही है, अब धूनियों से शरीर जला लिया इससे तुझे कौन सी शान्ति आई?''

मेरा ज्यादातर जीवन संघर्ष में बीता है। मुझे ऐसी कोई खतरनाक बीमारी नहीं। कुल मिलाकर मैं ठीक हूँ। मैंने बहुत भूख-प्यास काटी। कई-कई दिन खाना न खाना, कई-कई दिन जागना जिससे खाने वाली जगह कम हो जाती है इसलिए आज मैं कमजोरी की शिकायत करता हूँ। इससे हमारी विचारधारा ही बदल जाती है फिर अच्छे खाने के लिए दिल नहीं करता। भोगों की तरफ से अपने आप ही आपका दिल हट जाएगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जिन पाया तिन पूछो भाई, सुख सतगुरु सेव कमाई हे।

जिसने साधना की है संघर्ष किया है आप उससे पूछें! भूखे को रोटी की, प्यासे को पानी की कद्र होती है। गुरु की कद्र उसी को है जिसने जिंदगी में बहुत कठिन मेहनत और खोज की होती है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना मुश्किल है परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं।'' आप जो कुछ कहते थे सच कहते थे। मुझे कोई भी आपकी बड़ाई या निन्दा करने वाला नहीं मिला था। ये आप ही जानते थे कि आप किस तरह पांच सौ किलोमीटर का रास्ता तय करके मेरे पास पहुँचे।

मुझे महाराज सावन सिंह के सतसंग में जाने का और उनके नजदीक होने का काफी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। महाराज सावन सिंह जी अपनी खोज के बारे में बताया करते थे कि आपने बाईस साल खोज की। जिसने बाईस साल गुरु की खोज की हो, जिस पोल पर परमात्मा काम करता है क्या उसे पता नहीं! बाबा जयमल सिंह जी महाराज खुद ही सावन सिंह जी के पास पहुँचे थे।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी बाहरी तौर पर मिलने से सात साल पहले महाराज कृपाल के अंदर ही दर्शन देने लगे थे। जिन्हें इतनी लगन से गुरु मिलता है वे गुरु का कहना क्यों नहीं मानेंगे? वे गुरु के हर हुक्म के ऊपर फूल चढ़ाते हैं। महाराज कृपाल गुरु की महिमा, नाम की महिमा के बारे में जानते थे।

आप बहुत से प्रेमियों की मदद करते थे कि आप महाराज सावन सिंह जी के दर्शन करके आओ, उनसे 'नाम' लेकर आओ। अनेकों आदमी मिलते हैं जो यह बताते हैं कि हमें महाराज कृपाल सिंह जी ने किराए के पैसे देकर महाराज सावन सिंह जी के पास 'नाम' लेने के लिए भेजा था।

कबीर साहब कहते हैं कि हम भूले हुओं को परमात्मा धन-दौलत देता है हम उस धन को शराबों-कबाबों में खर्च कर देते हैं लेकिन परमार्थ में नहीं लगाते। कुछ लोगों ने यहाँ इंतजाम के लिए धन खर्च किया जिससे कितने ही प्रेमियों ने यहाँ अभ्यास किया। क्या परमात्मा बेईसांफ है वह उसमें से उन्हें नहीं देगा?

मुट्ठी अन्न साध कोई मांगे कहें अनाज नेंह आया रे।।
कथा होए ते श्रोता सोवें वक्ता मूढ़ पचाया रे।।

कबीर साहब बड़े प्यार से कहते हैं, ''सतसंग हो तो नींद आएगी, आलस्य आएगा अगर वहाँ रंग-तमाशा हो रहा हो तो पता नहीं नींद कहाँ उड़ जाती है, आलस्य कहाँ चला जाता है?''

मेरा जातिय तजुर्बा है हर किसी पर ऐसे दो समय आते हैं एक शादी का समय और दूसरा घर में हमारा कोई प्यारा बिछुड़ जाए। इन दोनों समय पर कोई ऊँचे भाग्य वाला सतसंगी ही साबुत रहता है; नहीं तो वह दोनों ही समय पर डोल जाता है।

महाराज सावन सिंह जी जब अपने गांव सिकन्दरपुर जाते हुए मुक्तसर से होकर निकलते थे। उस समय मुक्तसर में थोड़े बहुत सतसंगी थे, एक सारा परिवार ही सतसंगी था। उस परिवार की एक छोटी सी लड़की ने महाराज सावन सिंह जी के दर्शन किए हुए थे। जब उसका अंत समय आया तो उसने बताया कि छिड़काव कर दें महाराज जी की कार आ रही है, वे आए हैं। उस परिवार के ऊपर इससे बढ़कर और क्या दया हो सकती है।

मेरा उस परिवार के साथ काफी अच्छा लगाव था। जब उस घर में शादी का प्रोग्राम आया तो उन्होंने मुझसे कहा कि आपका शादी में आना बहुत जरूरी है। उस समय मुझे महाराज कृपाल सिंह जी नहीं मिले थे, मेरे पास 'दो-शब्द' का ही भेद था। मैंने उन्हें कहा, ''अभी तो तुम कहते हो कि हम सतसंग की और महाराज सावन सिंह जी की बातें करेंगे लेकिन आपके घर काल आएगा वह डंडे से आप लोगों को नचाएगा।'' उन्होंने आकर बताया कि वाक्य ही काल आया।

वैसे तो हम कहते हैं कि हमें गुरु से बहुत प्यार है लेकिन शादी के वक्त हम बाजे वाले, नाचने वाले बुलाते हैं। खुद भी वहाँ

नाचते हैं। मेरा ख्याल है कि उस समय हम अपने अंदर और अपने पड़ोसी के अंदर भी परमार्थ नहीं रहने देते। तब पड़ोसी कहते हैं वैसे तो तुम आँखें बंद करके बैठते हो कि हम गुरु वाले हैं, अब तुम्हारा गुरु कहाँ गया? जब तुम इतनी बुरी हरकतें कर रहे थे।

कबीर साहब बहुत प्यार से बताते हैं कि कथा होती है तो हमें आलस्य आता है अगर नाच रंग तमाशे हों तो वहाँ से आलस्य भी पर लगाकर उड़ जाता है।

होय जहाँ कहीं स्वांग तमाशा तनिक न नींद सताया रे।।
भांग तम्बाकू सुल्फा गांजा सूफा खूब उड़ाया रे।।

अब कबीर साहब कहते हैं, ''किसी भी तरह का नशा भांग, तम्बाकू, सुल्फा, गांजा हमारी सेहत और सोचने की शक्ति पर बुरा असर डालता है। हम सतसंगी बनकर भी इन्हें नहीं छोड़ते। आप सोचकर देखें! परमात्मा किस तरह हमारे लिए दरवाजा खोले हम किस तरह उससे मिलें? सतसंगी का जीवन एक नमूने का जीवन होना चाहिए। दूसरा यह महसूस करे कि यह किसी सन्त के पास जाता है, यह हर बुराई से बचा हुआ है।''

गुरु चरणामृत नेम न धारे मधुआ चाखड़ आया रे।।

आप कहते हैं, ''गुरु के दर्शनों का नशा नहीं उतरता फिर भांग, शराब और कोई भी नशा करने की जरूरत नहीं। 'नाम' का नशा न दिन को उतरे न रात को उतरे यह कभी नहीं उतरता।''

जब बाबर बादशाह ने गुरु नानकदेव जी को कैद किया उस समय गुरु नानकदेव जी को चक्की पीसने पर लगाया हुआ था लेकिन आपकी चक्की अपने आप ही चल रही थी। आपकी आँखें बंद थी वृति एकाग्र थी और ध्यान अंदर लगा हुआ था। किसी ने

बाबर बादशाह को बताया कि एक फकीर है जिसका ध्यान अंदर लगा हुआ है उसकी चक्की अपने आप चल रही है। बाबर बादशाह भांग खाता था, उसके दिल में ख्याल आया कि यह फकीर भांग में मस्त है। बाबर ने खुश होकर गुरु नानकदेव जी को भांग देकर कहा कि आप यह भांग पीकर देखें! गुरु नानकदेव जी ने कहाः

पोस्त अफीम भंग उतर जाए प्रभात।
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।।

गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''बादशाह! तेरी इस अफीम, पोस्त का नशा शाम को खांए तो सुबह उतर जाता है, सुबह खाएं तो शाम को उतर जाता है। हमें तो वाहेगुरु अकाल पुरख मेरे गुरु ने ऐसा नशा दिया है जो न दिन को उतरता है न रात को उतरता है।'' आप अपनी बानी में लिखते हैंः

अमली जिए अमल खाए, त्यों हर जन जिए नाम ध्याए।

जिस तरह अमली की जान अमल में है उसी तरह मालिक के प्यारों की जान 'नाम' में है। सूफी सन्त फरीद साहब ऐसी दो आत्माओं की मिसाल देते हैं कि एक आत्मा हर रोज अंदर जाकर अपने गुरु से मिलती थी वह दूसरी आत्मा से कहती हैः

अज न सुत्ती कंत स्यों अंग मुड़े मुड़ जाए।
जाए पुच्छा दोहागणी तुम क्यों रैण बिहाए।।

बहन! आज मैंने सुबह आलस करके अपने पति गुरु से मिलाप नहीं किया उसके दर्शन नहीं किए, मेरे अंग टूट रहे हैं; उदासी छाई हुई है। मैं उन आत्माओं से पूछती हूँ जिनके दिल के अंदर कभी तड़प नहीं उठी कि मैं भी जाकर परमात्मा से मिलूं उनकी जिंदगी की रात कैसे बीतती है? स्वामी जी महाराज कहते हैंः

दिन न पक मास न बरसा, कभी न दर्शन को मन तरसा।

उलटी चलन चली दुनिया में ताँते जिआ घबराया रे।

कबीर साहब कहते हैं, ''दुनिया में उलटी चाल चली हुई है इसलिए संदेश देते हुए दिल घबराता है, परमात्मा हमारे अंदर है लेकिन हम उसकी खोज बाहर करते हैं।''

कन्ने कुड़ी ग्राही हौका ऐवें ढोल बजाण सखे।

बाबा बिशनदास जी कहा करते थे कि जो आपके अंदर बोलता है उससे पूछो तो सही तेरा क्या नाम है? बाबा बिशनदास जी यह भी कहा करते थे कि आपका बाऊ आपके शरीर के अंदर बैठा है यही आपके अंदर तार हिलाता है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो फिर पाछे पछताया रे।।

कबीर साहब कहते हैं, ''सारी जिंदगी विषय-विकारों में बर्बाद कर दी। इस जिंदगी को 'नाम' की तरफ लगाना था। परमात्मा ने बड़ी दया करके इंसान का जामा एक किस्म का हीरा दिया है, गुरु ने दया करके 'नाम' का तोहफा दिया है। हम आलस करके अपने कीमती समय को फालतू के कामों में गंवा देते हैं जब आखिरी समय आता है फिर पछताते हैं।''

प्यारेयो! किसी की उम्र पचास साल तो किसी की उम्र साठ साल है। आप सोचकर देखें! यह उम्र सपने की तरह गुजर जाती है पता ही नहीं चलता कैसे इतने साल बीत गए? हम बाद में पछताते हैं जब चिड़िया खेत चुग जाती है फिर पछताए क्या बनता है?

***

DVD No - 579

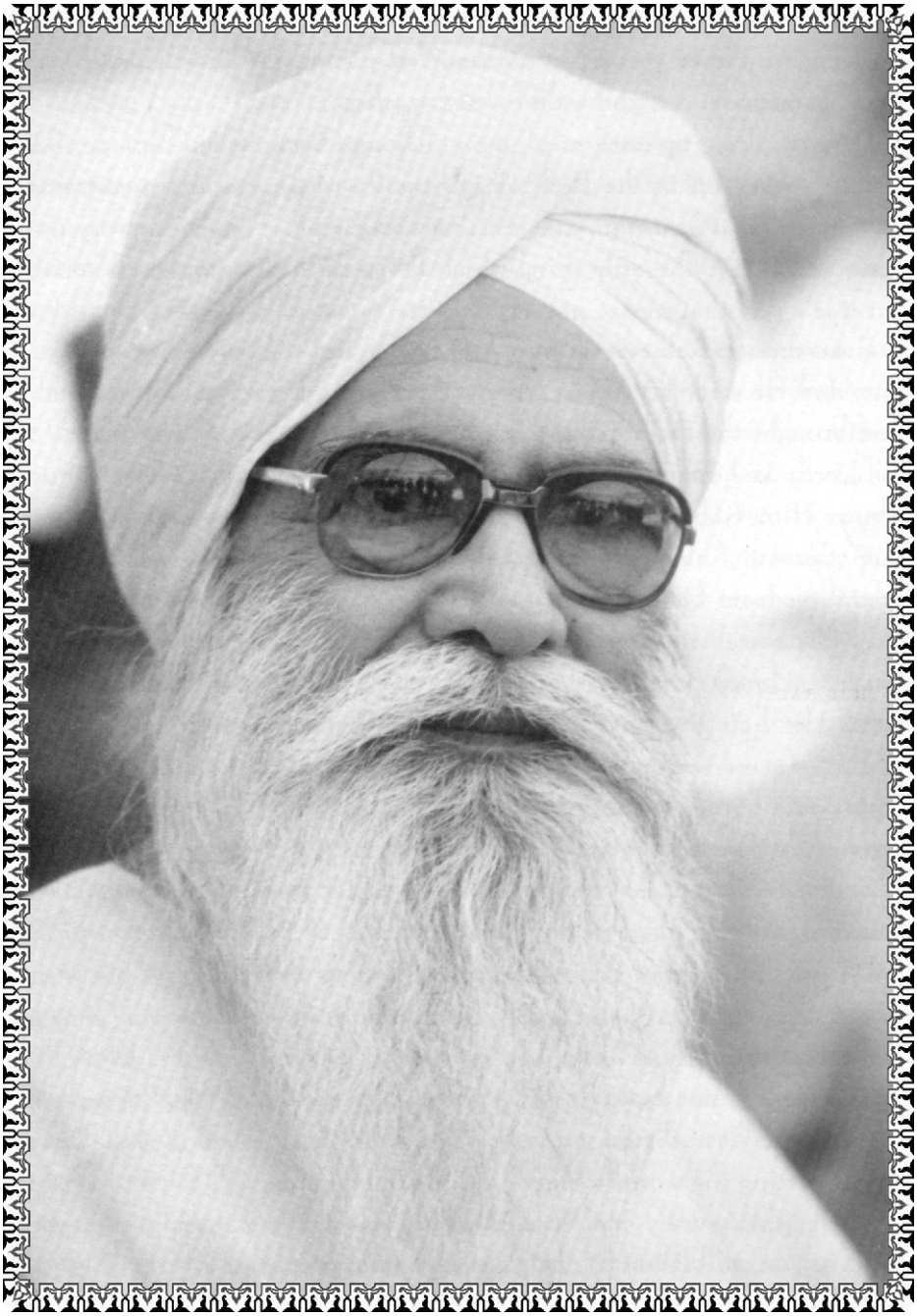

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

सतगुरु जी दर्श दिखाओ, सुणके फरियाद साडी।
आए हां तेरे दर ते, सुणयो आवाज साडी।।

एक प्रेमी: *मैंने एक सतसंग में सुना है कि गुरु का मौत के फरिश्ते के साथ वार्तालाप होता है। मौत के फरिश्ते ने ऐसा क्या किया होता है कि उन्हें फरिश्ते की देह और यह काम मिलता है?*

बाबाजी: हाँ भाई! आप सबको पता ही है कि जो कुछ बाहर इस स्थूल दुनिया में चल रहा है यह अंदर की नकल है। सच्चाई अंदर है इसलिए सभी सन्त जोर देते हैं कि अंदर जाकर देखें। महात्मा पीपा ने भी कहा है:

जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावे।

स्थूल दुनिया के मुकाबले सूक्ष्म दुनिया साफ है। वहाँ यहाँ से ज्यादा सच्चाई है। जैसे स्थूल दुनिया में मौत का वक्त मुकर्र होता है इसी तरह वहाँ सूक्ष्म दुनिया मे भी वक्त मुकर्र है। यहाँ आयु छोटी हैं वहाँ आयु बहुत लम्बी हैं। अगर इतिहास के सबूत लिए जाएं कि ब्रह्मा की आयु कितनी है, इस दुनिया के कितने युग हैं? विष्णु और शिव की कितनी लम्बी आयु है? इसी तरह हर फरिश्ते की या फरिश्तों के बादशाह इन्द्र के राज्य की कितनी अवधि है।

मौत और पैदाईश सूक्ष्म देश में भी है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार सूक्ष्म रूप में हर किसी के पीछे लगे हुए हैं, जलील कर रहे हैं। इसी तरह सूक्ष्म के मुकाबले कारण दुनिया साफ और अच्छी है लेकिन मौत-पैदाईश वहाँ भी है। सन्तमत के

साथ इसका कोई संबन्ध नहीं होता। ये हिसाब-किताब ऋषियों-मुनियों के होते हैं क्योंकि उन लोगों की पहुँच ब्रह्म तक होती है। सन्तों ने स्वर्गों को कोई अहमियत नहीं दी। कबीर साहब कहते हैं:

क्या नर्क क्या स्वर्ग सन्तन दोऊ रादे।
हम काहूँ की काण न कढदे अपने गुरु प्रसादे।।

गुरु सतसंगी के साथ होता है। सतसंगी को हिदायत होती है गुरु सतसंगी को इन मंडलों में रुकने नहीं देता इसे आगे ले जाता है। काल का राज्य त्रिलोकी तक है। ये सारे फरिश्ते काल के राज्य में हैं, ये काल के ही नुमांइदे हैं और अवधि खत्म होने के बाद इनकी ड्यूटी भी बदल जाती है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने काल के बारे में कहा है:

काल पाए ब्रह्मा अवतारा। काल पाए शिवजी अवतारा।
काल पाए विष्णु प्रकाशा। सकल काल का किया तमाशा।।

यह काल का खेल है। आप अनुराग सागर में देवी-देवताओं और फरिश्तों की कहानियां पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं कि इनकी क्या ड्यूटी है और ये क्या करते हैं? हिन्दुस्तान में मंदिरों के अंदर देवी-देवताओं की मूर्तियां रखी होती है और लोग इन देवी-देवताओं से आशा रखते हैं; वे लोग सन्तमत की तरफ न खुद आते हैं न उन्हें कोई दिलचस्पी होती है और न किसी को सन्तमत में आने के लिए प्रेरित ही करते हैं। वे कहते हैं कि ब्रह्मा और शिव से बड़ा कौन हो सकता है? अगर उनसे यह पूछा जाए कि ब्रह्मा और शिव कब हुए तो उनके पास इसका कोई जवाब नहीं होता।

जिस तरह आप हिन्दुस्तान में आए हुए हैं या मैं आपके मुल्क में जाऊं तो हमें उस मुल्क के राजदूत से वीजा लेना पड़ता है। हर मुल्क की सरकार ने अपने राजदूत मकर्र किए हुए हैं। हमें उनके

साथ मिलाप करना पड़ता है। मिलाप करके ही हम एक-दूसरे के मुल्क में आ जा सकते हैं।

हम जानते हैं कि राजदूत सरकार का खास बंदा होता है इसी तरह ये फरिश्ते काल के नुमांइदे हैं। इन्हें हर जीव का हिसाब रखने का हुक्म होता है। इन फरिश्तों की किसी के साथ दुश्मनी नहीं जो जैसा करता है उसे वैसा भुगतान करने का हुक्म दिया जाता है।जिस तरह राजदूत अपनी रिपोर्ट अपनी सरकार को भेजते हैं, रजिस्ट्र में सब कुछ दर्ज किया जाता है उसी तरह इनका शिरोमणि देवता धर्मराज है। धर्मराज को हुक्म है कि सच्चा न्याय करना है; जो जैसा कर्म करे उसे वैसा भुगतवाना है।

धर्मराज को यह हुक्म होता है कि मालिक के प्यारों के नजदीक नहीं जाना, इनसे पूछना तक नहीं बल्कि इनकी इज्जत करनी है। जिस तरह कोई खास सरकारी नुमांईदा किसी राज्य में जाए तो उसका आदर किया जाता है ऐसी ही नकल अंदर बनाई हुई है। काल ने सेवा करके सतपुरुष से आत्माएं मांग ली, आगे तन-मन का पिंजरा अख्तियार कर लिया। चाहे आज हम स्वर्ग-नर्क या नर देही में हैं, हमारे लिए तन-मन का पिंजरा है। जहाँ पिंजरा है वहाँ साथ ही मन है; जहाँ मन है वहाँ शान्ति नहीं, जहाँ तन है वहाँ दुख और परेशानियां हैं।

जब मैं पहले दूर पर घाना गया। वहाँ हिन्दुस्तान का जो राजदूत था वह सतसंग में भी आता रहा और उसने हमें अपने घर में भी बुलाया चाय-पानी का इंतजाम किया काफी प्यार दिखाया। अब आप देख लें! अगर उससे कोई सिफारिश करनी हो तो दुनियावी बंदा भी सिफारिश मान लेता है। उसके अंदर प्यार था कि ये हमारे हिन्दुस्तान के सन्त हैं। हमें यह था कि यह हमारे हिन्दुस्तान का

राजदूत है। मेरा आपको दुनियावी मिसालें देने का मकसद यह हैं कि आपको इस सवाल का जवाब समझना आसान हो जाएगा।

सबसे पहले मन की ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा नाम की तरफ न आए, मन किसी को भी नाम भक्ति की तरफ नहीं आने देता। मन अंदर अनेकों भ्रम और वहम डालता है, हमेशा परेशान करता है। अगर गुरु पूरा न हो! जब हम स्थूल दुनिया छोड़कर सूक्ष्म देह में अंदर जाते हैं तो वहाँ ये फरिश्ते रूकावट डालते हैं कि तूने आगे क्या लेने जाना है? प्यारेयो! ये काल की शक्तियां अंदर गई हुई आत्मा को लालच देती हैं डराती हैं। इस जगह के बारे में कबीर साहब कहते हैः

डाकनी साकनी बहु किलकारे, सतनाम सुन भागे सारे।

काल की शक्तियां यहाँ ललकारती हैं, कई बार भयानक रूप धारण करके भी सेवक को डराती हैं। गुरु हर समय साथ है। जब यह सिमरन करता है तो सतगुरु हाजिर होता है। शब्द-नाम, सिमरन में बहुत शक्ति होती है। गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में पहुँची हुई आत्माओं के बारे में कहते हैंः

शब्द सुणे ओह दूरों भागे, मत हर जम मारे बे परवाहा हे।

सन्त-महात्माओं ने यहाँ परंपरा चलाई है कि औरत मर्द के जामें में मजबूत रहना है जोकि औरत मर्द दोनों के लिए जरूरी है। एक बार शादी हो जाए तो शादी को न तोड़े, हर जगह जाकर विषय न भोगें। हम भजन करके अंदर जाएंगे तो वहाँ ये शक्तियां औरत को मर्द का रूप धारण करके लालच देती हैं कि तूने आगे क्या लेने जाना है? तू हमारे साथ विषय भोग, हम रोज तेरी खिदमत करेंगे। अगर मर्द है तो उसे ये शक्तियां नूरी औरत का

रूप धारण करके लालच देती हैं कि तू हमारे साथ विषय भोग तुझे बादशाह बना देंगे तूने आगे जाकर क्या लेना है? इसलिए सन्त पतिव्रता धर्म के ऊपर जोर देते हैं कि जिसका चरित्र यहाँ अच्छा नहीं वह आगे जाकर फेल हो जाता है।

आप विश्वामित्र की कहानी पढ़ते हैं। विश्वामित्र श्री रामचंद्र जी महाराज का बड़ा शक्तिशाली जनरल था, उसने साठ हजार वर्ष बड़ा सख्त तप किया था; उसकी स्वर्ग तक रसाई थी। जब वह स्वर्ग में गया तो उसे उर्वशी परी ने ठग लिया; शकुन्तला पैदा हो गई। पहले तो शहरों में विश्वामित्र-उर्वशी पर नाटक होते थे आजकल तो उस पर फिल्म भी बना दी है कि किस तरह विश्वामित्र का तप भंग हुआ। आप देखें! स्वर्ग तक पहुँचे हुए ऋषियों-मुनियों को सूक्ष्म भोगों ने गिरा दिया।

इसी तरह काल की शक्तियां जीव को नाम की भक्ति करने से रोकती हैं। जब सतसंगी नाम लेकर बुराई करता है तो काल उस समय गुरु को दिखाता है कि तूने इसे नाम दिया है क्या यह नाम के काबिल था? तू इससे अपना नाम वापिस ले ले। जीव के दाईं तरफ शब्द रूप गुरु और बाईं तरफ काल बैठा है। इसी जगह इनका वार्तालाप होता है।

सन्तों का यह कायदा है अगर वे जीव को कोई चीज दे देते हैं तो वापिस नहीं लेते। अगर किसी का पुत्र बदमाशी करे, कोई उसके पिता से कहे कि तेरा बेटा बदमाश है तू इसे घर से निकाल दे तो समझदार पिता मायूस होता है कि मेरे बेटे ने अच्छा नहीं किया। चाहे वह अपने बेटे की हरकत से खुश नहीं फिर भी पिता अपने पुत्र को घर से निकालने के लिए तैयार नहीं होता। वह कहता है कि मैं इसे समझा लूंगा यह अच्छा बन जाएगा।

इसी तरह गुरु भी अंदर काल शक्ति से कहता है कि मैं इसे समझाऊंगा यह अच्छा बन जाएगा। आला दर्जे के सतसंगियों को पता है कि बाहर भी सेवक की गलतियों पर लोग सन्तों को ताना मारते हैं कि यह सन्तों का नामलेवा है, सतसंगी है लेकिन यह बुराई फिर भी नहीं छोड़ रहा। जिस तरह सन्तों को बाहर बहुत कुछ सुनना पड़ता है इसी तरह सन्तों को अंदर भी सेवक के मुत्तलिक बहुत कुछ सुनना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु पीर नहीं उड़ते उनके सेवक उन्हें उड़ाते हैं। सेवक जितने ज्यादा अच्छे होंगे उतना ही गुरु का नाम चमकेगा, उनकी उतनी ज्यादा मान्यता होगी।'' जो जीते जी अभ्यास के जरिए अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि किस तरह सतगुरु एक-एक रूह के लिए काल के साथ झगड़ा करता है; किस तरह जीव को छुड़ाकर ले जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल ने कर्ज लेना है गुरु दे, चाहे शिष्य दे! काल एक पाई की भी रियायत नहीं करता। यह काल की मर्जी है कि वह जो चाहे अफजाना ले, यह सब कुछ सन्तों को सहना पड़ता है। अगर हम जीते जी ऊपर नहीं जाते तो सतगुरु आखिरी वक्त थोड़ी सी ऊपर गई आत्मा को अंदर तीसरे तिल पर संभाल लेता है अगर यहाँ न संभाले तो अंड में जाकर संभाल लेता है लेकिन वह अपनी मौज जरूर बरताता है।''

अगर सतसंगी शान्त है उसके आसपास सतसंगी हैं तो वह आसपास वालों को जरूर बताता है अगर बेसतसंगी पास हैं या कई बार बीमारी में वह कोई खास बात नहीं करता तो गुरु अंदर जरूर उसकी संभाल करता है। अंदर जो कुछ वार्तालाप होता है उसे आत्मा जरूर देखती सुनती है।

जब हमारी आर्मी अमृतसर साहब में थी उस समय मेरा आँखो देखा एक वाक्या है। महाराज सावन सिंह जी का एक प्रेमी चोला छोड़ने लगा। जब वह आँखो के पीछे गया उस समय डाक्टरों ने भी कह दिया कि इसने चोला छोड़ दिया है। लोग तैयारियां कर रहे थे। वह दो-तीन घंटे बाद शरीर में आया तो उसने बताया कि जब मैं अंदर गया वहाँ एक बहुत बड़े आकार का आदमी बहुत बड़ी बही लेकर बैठा था। उसने सारी बही खोलकर देखी और कहा कि इसका यहाँ हिसाब नहीं है इसे वापिस लेकर जाओ। जिसे लाना है वह कोई और आदमी है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि काल पाई-पाई का हिसाब रखता है।

उन दिनों महाराज सावन सिंह जी मजीठा रोड अमृतसर में सतसंग देने गए। महाराज जी के साथ उनके पाठी करतार सिंह और भान सिंह थे। उस समय आपका एक सतसंगी चोला छोड़ने लगा तो आपने दोनों पाठियों से कहा, ''तुम देखकर आओ कि मौत के वक्त सतगुरु आता है या नहीं?'' वे दोनों वहाँ गए। उस सतसंगी ने बताया कि गुरु आया है हम जा रहे हैं।

प्यारेयो! अगर गुरु की ऊपर सच्चखंड में रसाई नहीं और वह कभी इन देवताओं से मिला ही नहीं तो वह हमें छुड़ाकर कैसे ले जाएगा? गुरु का इन देवताओं के साथ संपर्क होता है। दाईं तरफ शब्द रूप गुरु और बाईं तरफ काल है। जब आत्मा जाती है अंदर गुरु आवाज देता है और काल भी आवाज देता है। आपको रोज बताया जाता है कि बाईं तरफ की आवाज नहीं सुननी दाईं तरफ की आवाज सुननी है; आपका रास्ता इस तरफ है। जब गुरु दाईं तरफ आवाज देता है तो आत्मा उस तरफ चली जाती है और गुरु उसे संभाल लेता है।

जिन आत्माओं को नाम नहीं मिला गुरु नहीं मिला उन्हें काल आवाज देता है आत्मा उसी तरफ चली जाती है, काल उन्हें संभाल लेता है। तुलसी साहब इस तरह बयान करते हैंः

काल दाड़ में आई चबानी, तब ढरके नैनन में पानी।

जब गुरु आत्मा को लेने के लिए आता है उसका नूरी स्वरूप सुंदर और प्यारा होता है। आत्मा उस स्वरूप को देखकर खुश होती है। दूसरी तरफ काल का भयानक रूप होता है। काल का मुँह खुला हुआ होता है जब आत्मा जाती है तो वह आत्मा को अपनी दाढ़ो में चबा जाता है।

हमें सच्चखंड पहुँचे हुए महात्माओं की बानियां पढ़ने से पता लगता है कि किस तरह गुरु अंदर आत्मा की संभाल करता है, वहाँ काल भी आता है। गुरु अभूल शक्ति होती है गुरु दयावान होता है। गुरु तुरंत अपनी ड्यूटी पर पहुँचता है, सेवक की ड्यूटी है कि वह प्रेम-प्यार से भजन-सिमरन करे।

हमें भी चाहिए गुरु की हिदायत के मुताबिक अपना भजन-सिमरन करें। गुरु नामदान के समय जो हिदायत देता है हमें उस विधि के मुताबिक भजन-सिमरन करना चाहिए।

***

DVD No - 611

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले संदेश

एकाग्रता

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

तेरी कुदरत तू ही जाने होर न दूजा जाणेगा।

आप सबने इस जगह के बारे में काफी कुछ सुना और सन्तबानी मैगजीन में भी पढ़ा है, हमने इस जगह की महानता को समझना है। सन्तमत अपने आपको सुधारने का, समझने का मत है। सन्तमत बातों का मत नहीं, पढ़-पढ़ाई का मत नहीं। सन्त पढ़ाई को बुरा नहीं कहते लेकिन आप जो पढ़ते-लिखते और सुनते हैं आपको अंदर जरूर देखना चाहिए कि क्या हमारा रहन-सहन सन्तमत के मुताबिक है? लोगों को उपदेश देने से अपने आप करना हजारों गुना बेहतर है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पश्चिमी लोगों का मन बहुत जल्दबाजी करता है।'' एक पश्चिमी प्रेमी ने आपसे नाम लेकर अभी एक महीना भी नहीं हुआ था कि आपको पत्र लिख दिया कि मेरी कोई तरक्की नहीं हुई। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमारे मन को जन्म-जन्मांतरों से बाहर भटकने की आदत पड़ी हुई है। मन को सुधारना दिनों या महीनों का कार्यक्रम नहीं है। हो सकता है इसमें पूरी जिंदगी ही निकल जाए! फिर भी यह हम पर निर्भर करता है कि हम कितनी मेहनत करते हैं, हमारे ख्याल और जिंदगी कितनी पवित्र है और रोजी-रोटी कमाने में हमारी कितनी पवित्रता है?''

सतगुरु अभूल होता है। वह गलती नहीं करता, जिस आत्मा को 'नाम' देता है उसे भूलता नहीं। सतगुरु शब्द-स्वरूप होता है वह इंसानी जामें में भगवान ही आया होता है। उसे पता होता है

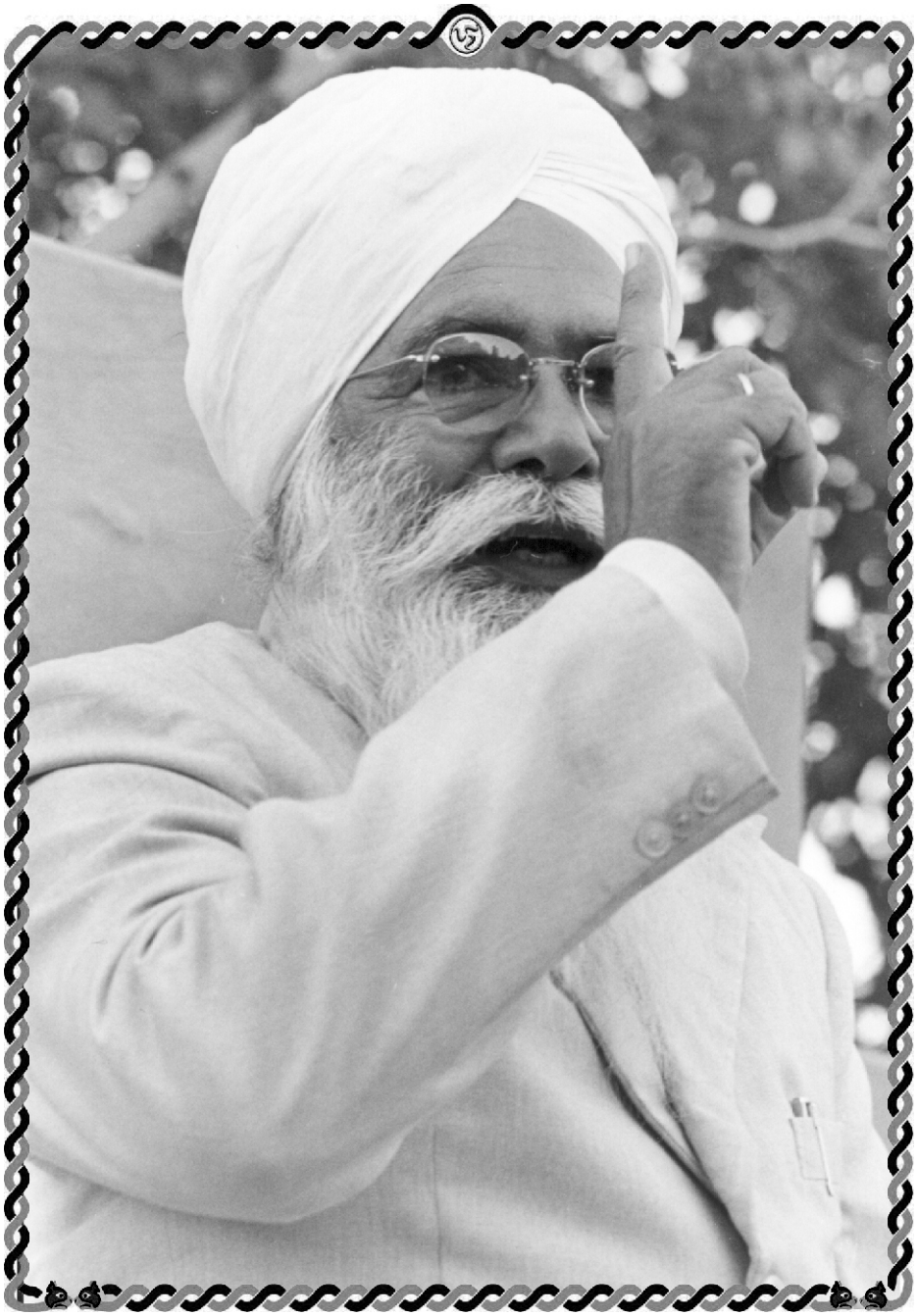

कि मैंने किसे 'नाम' दिया है। वह इस समय क्या कर रहा है और उसे किस चीज की जरूरत है? हम उस समय दुखी होते हैं जब अपना भरोसा छोड़ देते हैं, अपने अंदर जरूरत से ज्यादा ख्वाहिशें उठाते हैं; उस समय हमारा गुरु के ऊपर न भरोसा रहता है न प्यार ही रहता है।

कोई भी माता अपने बच्चे को दुखी देखकर खुश नहीं होती, वह बच्चे की बेहतरी के लिए कई बार डाक्टर से कड़वी दवाई लाकर भी बच्चे को देती है। माता बच्चे की बेहतरी चाहती है उसे बच्चे के फोड़े का आपरेशन भी करवाना पड़ता है। उसे बच्चे से कोई दुश्मनी नहीं होती। हमें हौंसला नहीं हारना चाहिए, हिम्मत रखनी चाहिए। रोज अपना अभ्यास जारी रखना चाहिए।

सतगुरु का नूरी स्वरूप, शब्द, चन्द्रमा, सूरज, प्रकाश सब कुछ अंदर है। हमें अपने फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे इकट्ठा करने की जरूरत है। जब हम **एकाग्र** हो जाते हैं उस समय हम प्रकाश, तारे, सूरज, नूरी स्वरूप सब कुछ देखते हैं लेकिन जब हमारा मन इधर-उधर हो जाता है तब ध्यान भी नीचे गिर जाता है फिर न हम शब्द सुन सकते हैं न प्रकाश और तारे ही देख सकते हैं। जब हमारी **एकाग्रता** भंग हो जाती है तो कई बार ऐसा महसूस होता है शायद! सतगुरु की दया हट गई है हम घबराकर इस मत को छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्यारेयो! गुरु की दया सदा ही जारी रहती है। चाहे गुरु शरीर भी छोड़ जाएं लेकिन जिन्हे गुरु ने नाम दिया होता है उनके लिए दया जारी रहती है बल्कि गुरु पहले से भी ज्यादा संभाल करते हैं लेकिन हमारा मन भटक जाता है। यह हमारे मन की ही चलाकी होती है जब फिर कुछ दिनों बाद हम **एकाग्र** होते हैं दिल को चोट

लगती है कि यह क्या हुआ फिर उस दया को महसूस करते हैं, अंदर प्रकाश, तारे सब कुछ देखना शुरू कर देते हैं।

आपने अनुराग सागर में पांडवों के बारे में पढ़ा है। पांडवों ने बारह साल बनवास काटा था। उस समय हिन्दुस्तान में यह रिवाज था अगर किसी लड़की ने राजा-महाराजा से शादी करवानी होती थी तो स्वयंबर रचाया जाता था, लड़की जिसके गले में फूल माला पहना देती थी उसे शादी समझा जाता था।

द्रोपदी के पिता ने स्वयंबर रख दिया। नीचे तेल का कड़ाहा रख दिया और ऊपर तेज घूमने वाली मछली थी। शर्त यह थी कि जो आदमी नीचे तेल में देखकर मछली की आँख में तीर मार देगा वह द्रोपदी को ब्याह कर ले जा सकता है। एकाग्रचित आदमी ही तीर और राईफल का निशाना ठीक तरह लगा सकता है। जिसका मन हिलता-डुलता है वह तीर नहीं मार सकता। उस स्वयंबर में अर्जुन कामयाब हुआ। उस समय अर्जुन रागियों के भेष में था।

आपको पता है एक राजा की लड़की की शादी गरीब से हो जाए तो सखी-सहेलियां ताने तो देती ही हैं कि तेरे साथ अच्छा नहीं हुआ एक रागी के साथ तेरी शादी हुई है। द्रोपदी अंदरूनी राज से वाकिफ थी। द्रोपदी ने कहा कि तुम ठीक कहती हो लेकिन इस तरह तेज चलने वाली मछली की आँख में तीर मारना किसी एकाग्रचित्त का ही काम है। यह तो वक्त ही बताएगा हो सकता है यह किसी समय संसार का विजेता साबित हो। यह सच है जब महाभारत का युद्ध हुआ तो अर्जुन ही विजेता साबित हुआ था।

सन्तमत में हमारी **एकाग्रता** जितनी ज्यादा होगी हम उतना ही अपने आपको गुरु परमात्मा के नजदीक समझेंगे। शब्द को अच्छी तरह सुन सकेंगे, प्रकाश को ज्यादा से ज्यादा देख सकेंगे।

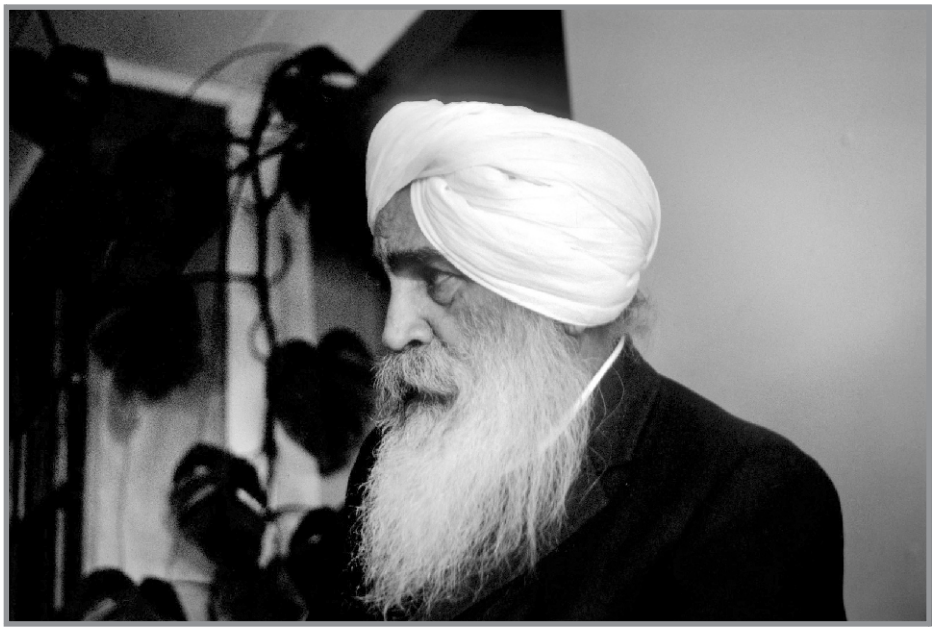

मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मेरे गुरु ने जो कहा मैं वह कर सका, इसमें मेरी अपनी कोई ताकत नहीं थी। यह मकान मैंने अपनी खुशी से नहीं बनाया था यह आपकी दया से ही बना। जब आपने मुझे इसके अंदर दाखिल किया मेरी आँखों पर हाथ रखा कि बाहर नहीं अंदर देखना है। उस समय मैंने यही विनती की, ''मेरी लाज आपके हाथ है।''

मेरा जातिय तजुर्बा है कि सतगुरु अभूल होते हैं। आपने कहा था, ''मैं खुद ही जरूरत के मुताबिक यहाँ आता रहूँगा।'' आप अपनी बीमारी के दिनों में अंदरूनी तौर पर और बाहरी तौर पर इस गरीब आत्मा की संभाल करते रहे। यह आपकी खास दया थी जो बयान से बाहर है।

***

D.V. D - 413

धन्य अजायब

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से अहमदाबाद में 4, 5 व 6 जुलाई 2014 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

ईश्वर भवन,
(नजदीक कॉमर्स कालेज क्रॉस रोड),
नवरंगपुरा,
अहमदाबाद (गुजरात)
फोन - 99 98 94 62 31 व 97 25 00 57 94